P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हाईस्कूल के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

जगदीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बी0एड0 विभाग,
श्री गांधी पी0 जी0 कालेज,
मालटारी, आजमगढ़ (उ0प्र0)

सारांश

आधुनिकता एवं विकास की अन्धाधुन्ध दौड़ में आज विश्व के सभी देश किसी न किसी पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त हैं। वजह चाहे जनसंख्या विस्फोट हो या औद्योगिक क्रांति, पर इतना तो तय है कि सौरमण्डल में अवस्थित पृथ्वी पर उपस्थित जीवधारियों का अस्तित्व खतरे में है।

आज विकसित देश पर्यावरण के प्रति सबसे ज्यादा जागरूक है, क्योंकि उन्हीं देशों में पर्यावरण की सबसे ज्यादा उपेक्षा हुई है। अनेक पश्चिमी देशों में तो यहां तक स्थिति पहुंच गई है कि वहाँ पीने के लिए शुद्ध जल, सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा, खाने के लिए शुद्ध भोजन और कृषि के लिए शुद्ध मिट्टी का अभाव होने लगा है। यह एक विडम्बना है कि आधुनिक युग को विज्ञान एवं तकनीकि का युग कहा गया है, जबकि सबसे ज्यादा विनाशकारी कार्य इसी युग में हुए है, जिसने हमारे पर्यावरण को सबसे ज्यादा क्षति पहुंचायी है।

मुख्य शब्द : पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण शिक्षा।

प्रस्तावना

पर्यावरण जागरूकता से हमें पर्यावरण सम्बन्धी तथ्यों, घटकों, प्रत्ययों तथा कारणों की जानकारी प्राप्त होती है। इसके द्वारा हमारे ज्ञानात्मक पक्ष का विकास होता है। पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण शिक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं सामाजिक समूहों में पर्यावरण तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूकता तथा संवेदनशीलता विकसित की जाती है। जैसे ही व्यक्ति जागरूक हो जाता है वह सम्पूर्ण पर्यावरण के प्रति तथा उससे सम्बन्धित समस्यायों, जैसे जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरणीय असंतुलन, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, बाढ़, सूखा, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण (Conservation) तथा परिरक्षण (Preservation) इत्यादि के प्रति संवेदनशील हो जाता है तथा इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास करने लगता है। इस प्रकार पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य है, जिसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज को उसके पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाया जाता है।

वर्तमान समय में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्पादन क्रिया में तीव्र विकास, संसाधनों का अधिकतम दोहन, नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि के फलस्वरूप पर्यावरण सम्बन्धी विकराल समस्याएं हमारे सामने खड़ी है, जिससे हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। इस वजह से पर्यावरण जागरूकता हमारे लिए आवश्यक है। इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए एक पारिस्थितिकी मित्र पीढ़ी के निर्माण के लिए ''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हाईस्कूल के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का एक तुलनात्मक अध्ययन'' शोधकर्ता का उसी दिशा में एक प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण व शहरी छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. ग्रामीण व शहरी छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध की शून्य परिकल्पनाएं निम्न प्रकार है–

1. हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. ग्रामीण व शहरी छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. ग्रामीण व शहरी छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्वी उ0प्र0 के आजमगढ़ जिले के पल्हनी ब्लाक में अवस्थित उ0प्र0 बोर्ड द्वारा संचालित शासकीय एवं अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।

शोध विधि

वर्तमान अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या

पूर्वी उ0प्र0 के आजमगढ़ जनपद में उ0प्र0 बोर्ड, इलाहाबाद द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् समस्त हाईस्कूल के छात्र– छात्राएं जनसंख्या का निर्माण करते हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शासकीय एवं अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों (शैक्षिक सत्र 2018–19) के 10 वीं कक्षा में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को लिया गया है। इन विद्यार्थियो में शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जिसका विवरण अधोलिखित तालिका में स्पष्ट किया गया है–

तलिका 1. परिवेश एवं लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की संख्या

क्रम सं0	विद्यार्थी	ग्रामीण	शहरी	योग
1.	छात्र	50	50	100
2.	छात्राएं	50	50	100
3.	कुल	100	100	200

उपरोक्त परिभाषित संख्या में से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 100 छात्र (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) तथा 100 छात्राएं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) थीं।

प्रयुक्त उपकरण

शोध में आंकड़ो के एकत्रीकरण हेतु पी0के0झा (2005) द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत उपकरण *"Environmental Awareness Ability Measures (EAAM)"* का प्रयोग किया गया, जिसकी विश्वसनीयता 0.84 है।

सांख्यिकीय तकनीक

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ो के विश्लेषण हेतु मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं क्रान्तिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

वर्तमान अध्ययन हेतु जिन उद्देश्यों को लेकर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है उनसे प्राप्त परिणाम तथा व्याख्या निम्न है–

तालिका 2– पर्यावरणीय जागरूकता के सभी आयामों पर छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	C.R. मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्र	100	121.65	5.35	2.80	3.61	0.01 स्तर पर सार्थक
2.	छात्राएं	100	124.45	8.30			

तालिका. 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि C.R. का मान 3.61 है जो सार्थकता के लिए 0.01 विश्वास के स्तर के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 3–शहरी छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	C.R. मान	सार्थकता स्तर
1.	शहरी छात्र	50	35.4	9.56	2.70	1.25	सार्थक नहीं
2.	शहरी छात्राएं	50	38.1	11.8			

तालिका. 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि C.R. का मान 1.25 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना ''शहरी छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

तलिका 4– ग्रामीण छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक विवरण

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	C.R. मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण छात्र	50	48.21	8.62	3.29	2.94	0.05 स्तर पर सार्थक
2.	ग्रामीण छात्राएं	50	52.40	6.76			

तालिका. 4 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि C.R. का मान 2.94 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण छात्र–छात्राओं में पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' अस्वीकृत हो जाती है।

तालिका 5– ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक विवरण–

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	ब्त्ण् मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण छात्र	50	41.9	7.5	10.3	5.88	0.01 पर सार्थक
2.	शहरी छात्र	50	31.6	9.9			

तालिका–5 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि C.R. का मान 5.88 है जो 0.01 पर सार्थक है। इस अन्तर से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता शहरी छात्रों से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण व शहरी छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत हो जाती है।

तालिका 6– ग्रामीण व शहरी छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक विवरण–

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	ब्त्ण् मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण छात्राएं	50	34.46	9.24	1.84	1.069	सार्थक नहीं
2.	शहरी छात्राएं	50	32.62	7.98			

तालिका. 6 से स्पष्ट है कि C.R. का मान 1.069 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के बीच पर्यावरणीय जागरूकता समान है। अतः शोध परिकल्पना ''ग्रामीण व शहरी छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के परिणाम स्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं के बीच पर्यावरणीय जागरूकता के सभी आयामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।
2. शहरी छात्र–छात्राओं के बीच पर्यावरणीय जागरूकता समान है परन्तु मध्यमानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शहरी छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक है।
3. ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता, ग्रामीण छात्राओं से अधिक पायी गई अर्थात ग्रामीण छात्र, छात्राओं से पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं।
4. ग्रामीण छात्रों व शहरी छात्रों के बीच पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया जिससे स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता शहरी छात्रों से अधिक है।
5. ग्रामीण छात्राएं पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति शहरी छात्राओं से अधिक सचेत व संवेदनशील हैं।

सुझाव

पर्यावरण जागरूकता के विकास में शिक्षक की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि हम जानते हैं कि शिक्षक किसी भी राष्ट्र के भावी कर्णधार को तैयार करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी देकर, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन (जैसे– बागवानी, आस–पास की सफाई, रैली, पोस्टर प्रदर्शनी, शैक्षिक भ्रमण, वाद–विवाद प्रतियोगिता, सेमिनार, वर्कशाप आदि) कराकर पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सकते हैं। शिक्षक द्वारा बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक ऐसी आदतों का विकास किया जा सकता है जो आजीवन चिरस्थायी प्रभाव वाले होते हैं जैसे– रात के समय पेड़–पौधों को नहीं छूना, हरे पेड़ नही काटना, घर के कूड़े–कचरे को आस–पास न फेंककर कूड़ेदान का उपयोग करना, पानी का दुरूपयोग न करना, आस–पास के परिवेश को साफ रखना। ये सभी सामान्य उदाहरण हैं जिनके द्वारा शिक्षक अपने विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *कपिल, एच0के0 (1981): ''सांख्यिकीय के मूलतत्व'' श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
2. *गैरेट, ई0हेनरी; 2008 :''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय'' सुरजीत प्रकाशन, कमलानगर, दिल्ली . 110007*
3. *गोयल, एम0के0 (2013): ''पर्यावरण शिक्षा'', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
4. *गुप्ता, एस0पी0 (2016): ''अनुसंधान संदर्शिका'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद*
5. *Best J.W.(2000): "Research in Education", Prentice Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi*
6. *चौरसिया, राम आसरे (1992): ''पर्यावरण प्रदूषण एवं प्रबन्ध'' बोहरा पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद*
7. *राठौर, मीना बुद्धिसागर एवं निशा महाराणा (2014): ''पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा*
8. *सिंह, के0पी0 (2014): ''पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता'' संजय बुक सेन्टर, वाराणसी*
9. *वार्ष्णेय, एम0के0 (2016): ''पर्यावरण प्रदूषण और नियंत्रण'' एशियन पब्लिशर्स, मुजफ्फरनगर*